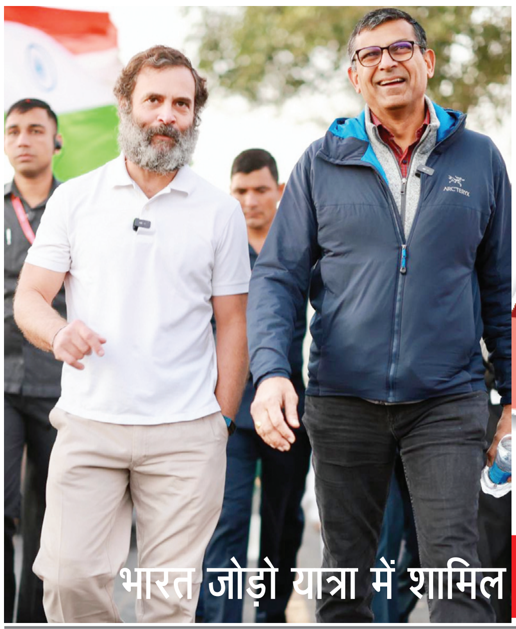

भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हुए आरबीआई... 8 | राजस्थान: भाजपा से अधिक... 3 | भारत जोड़ो यात्रा के टेंट में... 7

सांध्य दैनिक 4PM

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_Sanjay | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 8 ● अंक: 303 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार, 14 दिसम्बर, 2022

मूल्य ₹ 3/-

सफलता का जश्न मनाना ठीक है लेकिन असफलता से सबक लेना ज्यादा जरूरी है।

-बिल गेट्स

जिद...सच की

केसीआर की पार्टी के दिल्ली दफ्तर शुरू होने पर पहुंचे अखिलेश केंद्र में बनेगा नया समीकरण

बंद कमरे में केसीआर और सपा मुखिया की गुफ्तगू केंद्र में नये समीकरणों की आहट

- » आज पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय का था उद्घाटन
- » केसीआर ने खास तौर पर बुलाया अखिलेश और कुमार स्वामी को
- » देश के कई हिस्सों से किसान और कई दलों के नेता पहुंचे दिल्ली
- » केसीआर ने बनायी है अपनी नई पार्टी भारत राष्ट्र समिति

संजय शर्मा

नई दिल्ली। जैसे जैसे 2024 का चुनाव पास आ रहा है वैसे वैसे सत्ता के समीकरण भी बदल रहे हैं। तेलंगाना के फायर ब्रांड सीएम केसीआर ने अपनी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी बनाने के लिए उसका नाम बदल दिया आज दिल्ली में इस पार्टी के दफ्तर का उद्घाटन भी कर दिया गया। इस उद्घाटन समारोह में सबसे खास बात सपा मुखिया अखिलेश यादव की मौजूदगी की रही। केसीआर ने उन्हें खास तौर पर दिल्ली बुलाया था। इस कार्यक्रम में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री कुमार स्वामी के अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों से आए नेताओं और किसान प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

उल्लेखनीय है पिछले दिनों केसीआर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अडानी पर तीखा हमला बोला था। गिरते हुए रुपया को लेकर और कोयला खरीद में अडानी की भूमिका को लेकर केसीआर ने भाजपा सरकार पर जोरदार प्रहार किया था इसके बाद तेलंगाना में सरकार गिराने की साजिश का भंडाफोड़ हुआ था और केसीआर ने आरोप लगाया था कि भाजपा उनकी सरकार गिराना चाहती है। एक स्टिंग ऑपरेशन के बाद कई लोगों को हिरासत में ले लिया गया था और भाजपा के संगठन मंत्री बीएल संतोष के खिलाफ भी एफआइआर दर्ज करा दी गई थी। इसके बाद भाजपा ने भी केसीआर की बेटी कविता के खिलाफ सीबीआई और ईडी का इस्तेमाल शुरू कर दिया था भाजपा को लगता था कि ऐसा करने से वो केसीआर को डरा लेगी। मगर डरने की जगह केसीआर ने और बड़ा मोर्चा खोल दिया। माना जा रहा है कि 224 के चुनाव में केसीआर एक बड़ी भूमिका के रूप में रहेंगे। इसी क्रम में उन्होंने अपनी पार्टी तेलंगाना राष्ट्र समिति का नाम बदलकर भारत राष्ट्र समिति कर दिया और उसे राष्ट्रीय पार्टी बना दिया। एक नया मोर्चे के संकेत आज उस समय मिल गए जब कार्यक्रम में अखिलेश यादव पहुंचे और बंद कमरे मे दोनों नेताओं के बीच लंबी गुफ्तगू हुई।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए केसीआर ने कहा कि देश में इस समय आपातकाल जैसे हालात हैं। रुपया लगातार गिर रहा है और किसान आत्महत्या कर रहे हैं, मगर दुर्भाग्य यह है कि देश का नेतृत्व इन सबसे बेखबर कुछ उद्योगपतियों को फायदा पहुँचाने में लगा हुआ है। उन्होंने कहा कि ये वो दौर है जब लोकतंत्र की हत्या की जा रही है ऐसे समय में किसानों मजदूरों और संत समाज के सभी वर्गों को एकजुट होकर ऐसी ताकतों का मुकाबला करना होगा।

तीसरा मोर्चा बनाने के संकेत दे रहे केसीआर

भारत राष्ट्र समिति के अध्यक्ष व तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने केंद्र में तीसरा मोर्चा बनाने के संकेत दे दिये हैं। बुधवार को दिल्ली में अपनी पार्टी के केंद्रीय कार्यालय के उद्घाटन समारोह में यूपी से कर्नाटक तक के नेताओं की आमद दर्ज कराकर उन्होंने अपनी राष्ट्रीय राजनीतिक इच्छाओं को परवान चढ़ाने की ओर कदम रख दिया। इस मौके पर अखिलेश यादव और कुमार स्वामी के अलावा देश के अलग-अलग क्षेत्रों से किसान नेताओं का पहुंचना इस बात प्रमाण है कि उनके एजेंडे में किसानों का मुद्दा अहम रहेगा जिस पर वह मोदी सरकार की घेराबंदी करेंगे।

दिल्ली में भारत राष्ट्र समिति के कार्यालय उद्घाटन में पहुंचे सपा मुखिया अखिलेश यादव, कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री कुमार स्वामी के साथ केसीआर।

4PM एक्सक्लूसिव

यूपी में बढ़ते अपराधों पर योगी सरकार पर बरसे सपा मुखिया अखिलेश

भाजपा राज में महिला सुरक्षा की बात सिर्फ विज्ञापनों तक सीमित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था को लेकर समाजवादी पार्टी ने बीजेपी सरकार पर करारा हमला बोल है। पूर्व मुख्यमंत्री व सपा मुखिया अखिलेश यादव ने निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी राज में महिला सुरक्षा की बात सिर्फ विज्ञापनों तक सीमित रह गई है। अखिलेश ने कहा कि कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब महिलाएं अपमानित न होती हों, बच्चियां दुष्कर्म की शिकार न होती हों।

अखिलेश यादव ने कहा कि सत्ता के संरक्षण में असामाजिक तत्वों का बोलबाला है। अपराधी जब चाहे तब अपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे है। उन्होंने कहा जनता बीजेपी राज से त्रस्त है। वहीं उन्होंने बीजेपी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जब प्रदेश अराजकता की गिरफ्त में है तो कैसा देशी-विदेशी निवेश और कैसा विकास? इसकी जवाबदेही से बीजेपी बच नहीं सकती है।

इसी क्रम में सपा मुखिया ने कुछ बड़ी घटनाओं का जिक्र करते हुए बताया कि गाजियाबाद के लोनी में 12 दिसम्बर को दिनदहाड़े हथियार के बल पर महिला से लूट की घटना विचलित करने वाली है। वृंदावन टूर पर गई छात्रा से प्रिंसपल पर रेप का आरोप है। उन्होंने कहा हाल ही में बांदा के विसंडा क्षेत्र में एक युवती की इज्जत से खिलवाड़ की घटना घटी। दबंगों ने उसके मां और भाई की पिटाई भी कर दी। पुलिस से शिकायत के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हुई। वहीं अखिलेश ने छेड़छाड़ की

घटना को लेकर कहा कि मेरठ में एक छात्रा छेड़छाड़ की घटना से इतना परेशान हो गई कि उसने पढ़ाई ही छोड़ दी। पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की तो मनबढ़ मनचले ने छात्रा और उसके पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी तक दे दी। ऊंचाहार के जगतपुर थाना क्षेत्र एक गांव की महिला के साथ रात्रि में दुष्कर्म की घटना की शिकायत होने पर भी पुलिस ने मुकदमा दर्ज नहीं किया। बहराइच के नानपारा कोतवाली क्षेत्र में एक 9 वर्षीय बालिका के साथ एक अधेड़ ने दुष्कर्म किया। अस्पताल में उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

2024 में 400 सीटें जीतने के केशव के दावे पर सपा का पलटवार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में हुए उपचुनाव के बाद अब राजनीतिक पार्टियां निकाय चुनाव में जुट गई हैं। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर भी उत्तर प्रदेश में राजनीति गर्म होती नजर आ रही है। नए-नए दावों और आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला शुरू हो गया है। इसी को लेकर उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने लोकसभा चुनाव में 400 से ज्यादा सीटें जीतने का दावा कर डाला। केशव मौर्य के इस दावे को सपा ने फर्जी बताते हुए विधानसभा चुनाव में खुद की सीट न बचाने को लेकर चुटकी ली।

केशव प्रसाद ने कहा कि लोकसभा चुनाव 2024 में बीजेपी 400 से ज्यादा जीतेगी। सपा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि 2022 विधानसभा चुनाव में जो लोग 400 पार कर रहे थे, वो लोग कहीं नहीं दिखे। उन्होंने आगे बताया कि 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने 272 प्लस के लक्ष्य को प्राप्त किया था। 2017 विधानसभा और 2019 में 300 पार का लक्ष्य भी पूरा किया। केशव ने यह भी कहा कि 2022 में 300 से थोड़ा पीछे रह गए थे। बाद में उपमुख्यमंत्री के बयान पर पलटवार करते हुए सपा प्रवक्ता फकरुल हसन ने कहा कि केशव प्रसाद मौर्य को बताना चाहिए, जिस दिन उपचुनाव का रिजल्ट आने वाला था, उस दिन उन्होंने अपना ट्वीट डिलीट क्यों किया? सपा प्रवक्ता ने कहा कि मैनपुरी और खतौली की जनता ने बीजेपी को जवाब दे दिया है। कहा कि जो खुद विधानसभा चुनाव में अपनी सीट नहीं जीत पाए, वो 400 क्या 500 से 600 का दावा भी कर सकते हैं?

तेजस्वी का नीतीश को रिटर्न गिफ्ट बताया अभिभावक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने सीएम नीतीश कुमार के उत्तराधिकार वाले बयान पर अब तेजस्वी ने भी नीतीश को अभिभावक बताते हुए उनका सम्मान किया है। तेजस्वी ने कहा कि वह हमारे अभिभावक हैं और हम उनके नेतृत्व में काम कर रहे हैं। इसके साथ ही आरजेडी नेता ने कहा कि हम आगे और मजबूती से काम करेंगे। इससे पहले बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने मंगलवार को कहा था कि 2025 में महागठबंधन को डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव लीड करेंगे। उन्होंने कहा कि इन्हें ही महागठबंधन को आगे ब?ना है। नीतीश कुमार ने ये बयान महागठबंधन के विधायक दल की बैठक के दौरान दिया था।

विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले मंगलवार को नीतीश कुमार बैठक ली थी। बैठक में सीएम के दिए इस बयान से साफ हो गया कि 2025 का विधानसभा चुनाव में तेजस्वी यादव के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। इस बैठक में महागठबंधन के सहयोगी सभी सात दल शामिल हुए। नीतीश कुमार ने एक बार फिर खुद के पीएम रेस में न होने की भी बात कही। उन्होंने कहा कि मेरा टारगेट 2024 में भाजपा को हटाना है ना कि प्रधानमंत्री बनना है। मालूम हो कि अगस्त में नीतीश कुमार ने बीजेपी का साथ छोड़कर महागठबंधन का दामन थाम लिया था।

संदीप पाठक बनाए गए 'आप' के राष्ट्रीय संगठन महासचिव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नई नवेली राष्ट्रीय पार्टी बनी आम आदमी पार्टी ने पार्टी के नए राष्ट्रीय संगठन महासचिव के को नियुक्त किया। पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने संदीप पाठक को राष्ट्रीय संगठन महासचिव नियुक्त कर दिया है। अब वे पूरे देश में पार्टी संगठन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्हें पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी का विशेष आमंत्रित सदस्य भी नियुक्त किया गया है।

संदीप पाठक गुजरात विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी के प्रभारी नियुक्त किए गए थे। इसके पहले संदीप पाठक पंजाब विधानसभा चुनावों के प्रभारी का दायित्व भी संभाल चुके हैं। उनके नेतृत्व में चुनाव लड़ते हुए पार्टी ने पंजाब में एतिहासिक जीत दर्ज की थी। इसके बाद उन्हें राज्यसभा में भेजकर उनका पार्टी में कद बढ़ाया गया था।

कौन हैं पाठक

संदीप पाठक आईआईटी दिल्ली के पूर्व सहायक प्रोफेसर संदीप पाठक उच्च शिक्षित हैं। उन्होंने ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज से शिक्षा प्राप्त की है। छत्तीसगढ़ के बटाहा गांव में पैदा हुए संदीप दीक्षित ने देश में अपनी उच्च शिक्षा राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे से की। पर्दे के पीछे रहते हुए उन्होंने पंजाब में पार्टी की जीत में अहम भूमिका निभाई। अगले वर्ष यानी 2023 में राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और कर्नाटक सहित नौ राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन राज्यों में पार्टी को आगे बढ़ाने की बड़ी चुनौती संदीप पाठक के सामने है।

हिमाचल : मंत्रिमंडल विस्तार से पहले मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री में बांटे गए सभी विभाग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में बेशक अभी मंत्रियों की नियुक्तियां नहीं हुई हैं, मगर मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री ने सभी विभाग आपस में बांट लिए हैं। हिमाचल सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग ने इस संबंध में मंगलवार देर रात को अधिसूचना जारी कर दी। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अपने पास वित, सामान्य प्रशासन, गृह, योजना और कार्मिक विभाग रखे हैं। उप मुख्य मंत्री मुकेश अग्निहोत्री को जलशक्ति विभाग, परिवहन और भाषा कला एवं संस्कृति विभाग दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने अपने पास पांच विभाग रखे हैं, जबकि उपमुख्यमंत्री को तीन विभाग दिए गए हैं।

बाकी मंत्रियों की नियुक्तियां जब तक नहीं हो जाती हैं, तब तक मुख्यमंत्री इनके अलावा अन्य सभी विभागों को देखेंगे। हिमाचल प्रदेश में ऐसा पहली बार हुआ है कि मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री को मंत्रियों से पहले पोर्टफोलियो दे दिए गए हैं। इससे पहले मुख्यमंत्री की नियुक्ति के साथ ही मंत्रियों की नियुक्तियां हो जाती थी, उसके बाद ही विभाग बांटे जाते थे। इस बार उप मुख्यमंत्री का पद भी प्रदेश में पहली बार मंजूर किया गया है। मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह के तीसरे दिन भी मंत्रियों पर फैसला नहीं हो पाया तो ऐसे में सरकारी कामकाज को चलाने के लिए दोनों को पोर्टफोलियो का आवंटन हो गया। मुख्य सचिव आरडी धीमान ने इस संबंध में मंगलवार देर रात को अधिसूचना जारी कर दी।

21 हजार से ज्यादा सिपाही जल्द बनेंगे हेड कांस्टेबल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पुलिस महकमे में 21,295 सिपाहियों के प्रमोशन की प्रक्रिया पूरी हो गई है। यूपी पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड ने डीजीपी मुख्यालय को पूरी सूची सौंप दी है। प्रमोशन के लिए रेस में 21,777 सिपाही थे, लेकिन 21,295 के प्रमोशन को हरी झंडी दी गई है।

जल्दी ही डीजीपी देवेंद्र सिंह चौहान के अनुमोदन के बाद इनकी सूची संबंधित जिलों में भेजी जाएगी। पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड के अध्यक्ष राज कुमार विश्वकर्मा ने बताया कि डीजीपी मुख्यालय से वर्ष 2011 तक भर्ती सिपाहियों की प्रोन्नति के लिए प्रस्ताव भेजे गए थे। भर्ती बोर्ड ने कुल 6 विभागीय प्रोन्नति समिति बनाई थी। इन समितियों ने एक-एक सिपाही की

स्क्रीनिंग कर कुल 21295 को प्रोन्नति के लिए उपयुक्त पाया है।

भर्ती बोर्ड की ओर से पूरी सूची डीजीपी मुख्यालय को भेज दी गई। कप्तान यह सुनिश्चित करेंगे कि जिस पुलिस कर्मी का प्रमोशन हुआ है वह मौजूदा समय में निलंबित तो नहीं है या किसी मामले में उसके खिलाफ कोई केस दर्ज तो नहीं है? यह सत्यापन करने के बाद जिले के कप्तान उसी स्थान पर संबंधित सिपाही को प्रमोशन देकर हेड कांस्टेबिल के पद पर पदोन्नत कर देंगे। प्रमोशन पाए पुलिस कर्मियों का तबादला बाद में किया जाएगा।

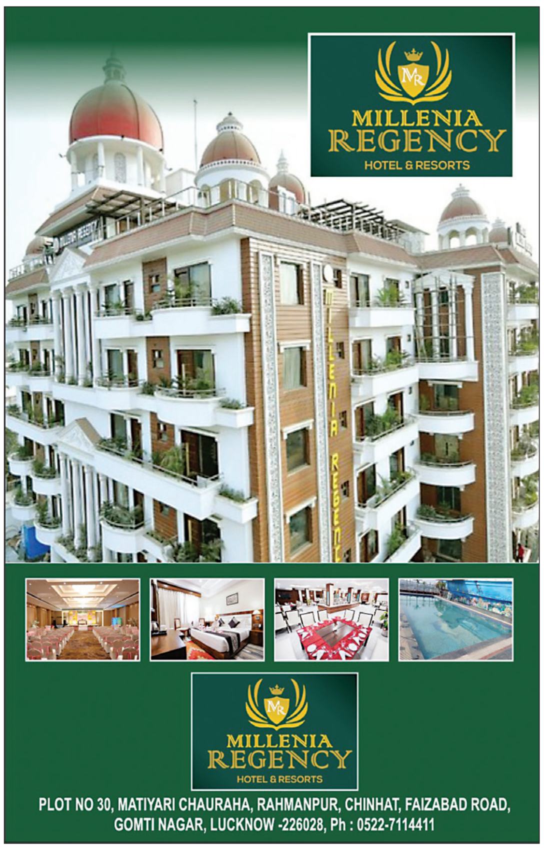

राजस्थान : भाजपा से अधिक कांग्रेस को 'आप' से रहना होगा सावधान !

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। हिमाचल में सत्ता हासिल करने के बाद अब कांग्रेस का लक्ष्य अगले साल राजस्थान में होने वाले विधानसभा चुनाव में अपनी सरकार को बचाए रखना है। हिमाचल की तरह राजस्थान में भी पांच साल में सत्ता परिवर्तन का रिवाज चलता आ रहा है। ऐसे में कांग्रेस वहां पर इस रिवाज को बदल कर लगातार दूसरी बार सत्ता के सिंहासन पर विराजमान होना चाहेगी। हालांकि, कांग्रेस के लिए राजस्थान में सरकार रिपीट करना बेहद चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि पार्टी के भीतर ही आपसी मनमुटाव और उठापटक लगातार जारी है। ऐस में इसके अलावा कांग्रेस के लिए आम आदमी पार्टी भी इस बार के चुनाव में कड़ी मुसीबत खड़ी कर सकती है। क्योंकि गुजरात चुनाव में कांग्रेस की इतनी बुरी हालत की जिम्मेदार काफी हद तक आम आदमी पार्टी ही रही थी। ऐसे में राजस्थान के चुनाव में कांग्रेस को आप से सतर्क रहना होगा, क्योंकि अगर जरा भी सावधानी हटी, तो समझो दुर्घटना घटी।

5 साल पहले हुए विधानसभा चुनाव में 'आप' ने गुजरात से बेहतर प्रदर्शन राजस्थान में किया था। यही अनुपात रहा तो अगले साल हो रहे चुनाव में आप 47 सीटों पर कांग्रेस को नुकसान पहुचाएंगी। ऐसा हुआ तो भाजपा के लिए सरकार बनाना आसान हो जाएगा। सिर्फ राजस्थान ही नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश में भी आप कांग्रेस के लिए खतरा पैदा कर सकती है। क्योंकि अब ये तो साफ है कि आम आदमी पार्टी से खतरा सिर्फ कांग्रेस को है, भाजपा को कोई नहीं।

40-50 सीटों पर पहुंचा सकती है नुकसान

अगर गुजरात में ही देखें तो आप ने सिर्फ 13 प्रतिशत वोट हासिल किए , मगर कई सीट ऐसी रहीं जहां पर आप प्रत्याशी दूसरे नंबर पर रहे। ऐसे में लगभग 33 सीटें ऐसी रहीं, जिन पर अगर आप और कांग्रेस के वोटों को मिला दें तो वो भाजपा से ज्यादा हो जाएंगी। इसी का नतीजा रहा कि 2017 में जहां कांग्रेस को 41 प्रतिशत वोट मिला था, वहीं इस बार के चुनाव में वो घटकर 28 प्रतिशत पर आ गया। इससे आप समझ सकते हैं कि आप ने कांग्रेस को किस तरह नुकसान पहुंचाया है।

यहां कांग्रेस को मिल सकती है आम आदमी पार्टी से चुनौती

राज्य में 40 से 50 सीटें हैं जिन पर कांग्रेस को आप बड़ा नुकसान पहुंचा सकती है। इनमें देखें तो करीब 18 सीटें ऐसी हैं जो पंजाब से लगी हुई हैं। अब चूंकि पंजाब में आप की सरकार है, ऐसे में लाजिमी है कि उस राज्य से सटी सीटों पर भी आप की पकड़ मजबूत होगी। इसके अलावा चूंकि आप एससी और आदिवासी प्रभावित सीटों पर अपनी पकड़ बनाने की कोशिश में लगी रहती है, तो उसे इसका फायदा राजस्थान में भी मिल सकता है। ऐसे में राजस्थान में भी जो आदिवासियों से सटी लगभग 17 सीटें ऐसी हैं, जहां पर आप कांग्रेस का खेल बिगाड़ सकती है। इनमें बांसवाड़ा की 5, सिरोही की 3, डूंगरपुर की 4 और उदयपुर की 5 सीटें शामिल हैं, जहां आप कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी बजा सकती है। इन सीटों के अलावा कुछ वो सीटें जहां पिछले चुनाव में हार-जीत का अंतर कम रहा था, उनमें भी आप कांग्रेस के लिए चुनौती खड़ी सकती है। इनमें पोकरण, दातारामग?, वल्लभनगर खेतड़ी, बेगू, सांगोद, पचपदरा, मसूदा, चाकसू, भीम, नावा और फतेहपुर जैसी सीटें शामिल हैं।

जहां पहुंचे केजरीवाल वहीं हुआ है कांग्रेस को बड़ा नुकसान

अगर कांग्रेस और आप के वोट बैंक को देखें तो राजस्थान में दोनों का वोट बैंक भी लगभग एक ही है। कांग्रेस का परंपरागत वोट बैंट मुस्लिम, एससी-एसटी ज्यादा है। वहीं भाजपा के मुकाबले कांग्रेस की पकड़ ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा है। दूसरी ओर आप भी मुफ्त चीजों को बांटकर इस वर्ग को अपनी ओर ज्यादा प्रभावित करता है। दूसरी ओर आप कांग्रेस से ज्यादा हिंदुत्व पर भी खुलकर बोल लेती है। ऐसे में आप कहीं से भाजपा को नहीं, बल्कि कांग्रेस को ही खतरा पहुंचाएगी। कांग्रेस के लिए आप इस लिहाज से भी खतरे की घंटी है, क्योंकि अगर पिछले चुनाव को देखें तो हालांकि आप ने गुजरात से ज्यादा वोट राजस्थान में हासिल किए थे। 2018 के विधानसभा चुनाव में आप को राजस्थान में 0.4 प्रतिशत वोट मिले थे, जबकि गुजरात में 2017 के चुनावों में उसे मात्र 0.1 फीसदी वोट मिले थे। उस समय तो आप की नेशनल लेवल पर उतनी पहचान भी नहीं थी, जबकि दिल्ली के बाद पंजाब में भी सरकार बनाने के बाद गोवा और गुजरात में उतरी आप अब राष्ट्रीय पार्टी बन गई है। ऐसे में इस बार खतरा और भी बढ़ गया है।

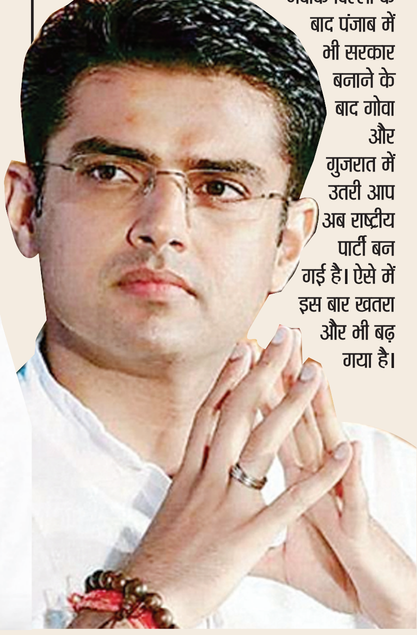

तेजस्वी का चेहरा आगे करना नीतीश की बड़ी सियासी चाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को राजनीति का कुशल रणनीतिकार माना जाता है। हालांकि, अपनी इसी खासियत के चलते वो लोगों के निशाने पर भी रहते हैं, क्योंकि उन पर लंबे समय तक भरोसा करना काफी मुश्किल है। वो आज एक के साथ हैं, तो कल किसी दूसरे का दामन थामने में उन्हें देर नहीं लगती। ये हम नहीं कह रहे, बल्कि ऐसा उनका अब तक का सियासी सफर और पिछला रिकॉर्ड बोलता है। नीतीश कुमार ऐसी रणनीति तैयार करते हैं कि उनके सरकार से बाहर न रहना पड़े। ताज्जुब की बात तो ये है कि चुनाव में कम सीटें जीतने के बाद भी नीतीश कुमार मुख्यमंत्री की कु पर विराजमान हो जाते हैं। वर्तमान सरकार में भी कुछ ऐसा ही हाल है। हालांकि, अब लगता है नीतीश कुमार ने अपना मन बदल दिया है। इसीलिए अब वो गठबंधन सरकार के अपने साथी और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं और उन्हीं के नेतृत्व में 2025 का विधानसभा चुनाव लड़ने की बात कर रहे हैं।

मंगलवार को विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन विधानमंडल दल की बैठक में नीतीश कुमार ने तेजस्वी की ओर इशारा करते हुए साफ कहा कि 2025 के विधानसभा चुनाव में तेजस्वी को आगे करना है। नीतीश कुमार ने साफ कहा कि विधानसभा का चुनाव डेप्यूटी सीएम तेजस्वी यादव के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। नीतीश ने साफ किया कि ना तो अब वह सीएम पद का उम्मीदवार बनना चाहता हूं न ही प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनना चाहता हूं। इस दौरान पार्टी के अन्य नेताओं के साथ तेजस्वी यादव और नीतीश के करीबी विजय कुमार चौधरी भी मौजूद रहे। इस बैठक में महागठबंधन के सहयोगी सभी सात दल शामिल हुए। नीतीश कुमार ने इस दौरान कहा कि शराबबंदी को लेकर कोई भी अनाप-शनाप बातें ना करें, क्योंकि सबके समर्थन से शराबबंदी हुई थी।

राष्ट्रीय राजनीति में जाना चाहते हैं नीतीश!

इससे एक दिन पहले ही नीतीश ने थर्ड फ्रंट की जगह मेन फ्रंट बनाने की बात कही थी और सभी विपक्ष को एकजुट होने की सलाह दी थी। नीतीश पिछले कुछ समय से लगातार सभी विपक्षी दलों को एकजुट करने में लगे हैं, जिससे बिहार की राजनीति को छोड़कर अब वो राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश कर चुके हैं। नीतीश खुद को पीएम मोदी के विकल्प के तौर पर देखते हैं। हालांकि, सामने से वो ये भी कहते रहते हैं कि उन्हें प्रधानमंत्री बनने की कोई इच्छा नहीं है, मगर पिछले कुछ महीनों से जिस तरह से वो देश की अलग-अलग क्षेत्रीय पार्टियों से मिल रहे थे और पूरे विपक्ष को एकजुट करने में लगे थे, उससे उनकी आंतरिक इच्छा का साफ पता चलता है। हालांकि, प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस की तरफ से सूखा रिस्पॉन्स मिलने के बाद अब नीतीश थोड़ा ठंडा पड़े हैं, मगर अभी भी वो प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति बनने की इच्छा अपने मन में लिए हुए हैं। इसलिए अचानक खुद को पीछे करके तेजस्वी को आगे बढ़ाने की नीतीश की रणनीति को भी समझना काफी मुश्किल है। अपनी इस रणनीति से नीतीश खुद को राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने की सोच रहे हैं।

बिहार में तेजस्वी यादव को कर रहे हैं आगे

ये कोई पहला मौका नहीं जब नीतीश ने तेजस्वी को आगे बढ़ाने की बात कही हो। वो इससे पहले भी कई बार तेजस्वी को आगे लाने की बात कह चुके हैं। इस दौरान भी वहां तेजस्वी यादव मौजूद रहे। नीतीश कुमार ने इस दौरान तेजस्वी को ही आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इससे पूर्व भी वे तेजस्वी की ओर इशारा करते हुए सार्वजनिक मंच से उन्हें आगे बढ़ाने की बात कह चुके हैं। नीतीश कुमार ने नालंदा में बोलते हुए कहा कि हमारे तेजस्वी जी हैं। इनको हम बिल्कुल आगे बढ़ा रहे हैं। जितना करना था कर दिए, इनको और आगे करना है। आप लोग एक एक बात समझ ही रहे हैं। हम लोग कोशिश कर रहे हैं काम करने का। हम को सेवा करना था,कर लिए। हालांकि, ये भी सत्य है कि नीतीश कुमार की कुटनीति को समझ पाना इतना आसान नहीं होता है। ऐसे में नीतीश का एकदम से खुद को पीछे करना और तेजस्वी को आगे बढ़ाने का ये फैसला हर किसी के गले में इतनी जल्दी उतर नहीं रहा। नीतीश कुमार ने इस दौरान कहा कि हमने महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलते हुए बिहार में शराबबंदी लागू की। शराबबंदी नहीं थी, तो कितना झगड़ा होता था। कितना झंझट होता था। सब ठीक हो गया है और आगे भी सब ठीक होगा। उन्होंने सबको सावधान रहने की अपील की और कहा कि अपने आस-पास देखते रहिए। आपको बता दें कि ऐसा पहली बार हुआ है कि 24 घंटे के भीतर नीतीश कुमार ने दो बार तेजस्वी यादव को बिहार की कमान सौंपने की बात कही है।

जिद... सच की

सियासत का मतलब सिर्फ 'सत्ता'

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

> "नेता जानते हैं कि जनता को अगर धर्म और जाति के खेल में नही उलझाया गया तो वो विकास की बात करेगी। वो पूछेगी कि इलाके में सड़क और बिजली, पानी और अस्पताल क्यों नहीं है। उनके बच्चों को रोजगार क्यों नहीं मिल रहा और आखिर यह महंगाई क्यों बढ़ती जा रही है। जाहिर है यह सारे सवाल राजनेताओं और सत्ता को बहुत परेशान करने वाले हैं। इनसे उपाय पाने का एक ही तरीका उनको समझ आता है कि आमजन को धर्म और जाति के खेल में उलझा दो।

देश की राजनीति आम जनमानस को अपने साथ नहीं जोड़ पा रही है। यह बहुत गंभीर बात है। राजनीति पहले देश और समाज को जोड़ने का काम करती थी, मगर इस दौर में राजनीति समाज और देश को विभाजित करने वाली बनती जा रही है। जिस तरह देश में धर्म और जाति के नाम पर जहर बोया जा रहा है वो बहुत खतरनाक और देश को तोड़ने वाला है। चाहे कोई भी राजनैतिक पार्टी हो या कोई राजनेता वो सामाजिक सौहार्द को बढ़ाता हुआ नजर नहीं आता। सभी का मकसद सिर्फ सत्ता हासिल करना रह गया है चाहे वो किसी भी तरह मिले।

राजनेताओं का यह आचरण आम जनमानस में राजनीति के प्रति एक घृणा का भाव पैदा कर रहा है। उनको लग रहा है कि देश एक ऐसे शून्य की तरफ जा रहा है जिसके आगे कुछ नजर नहीं आता। यह अनिश्चिय और भेदभाव का रास्ता समाज और देश को कहा ले जायेगा कहना मुश्किल है। अगर लोगों ने राजनीति के प्रति इतनी ही घृणा बढ़ती रही तो यह लोकतंत्र के लिये भी सही नही है। मगर लगता है राजनेताओं को इसकी जरूरत भी नहीं। वो जानते हैं कि उनको वोट समाज में घृणा फैलाकर ही मिलते हैं इसलिये वो नफरत का कारोबार और तेज करते रहते हैं।

दरअसल नेता जानते हैं कि जनता को अगर धर्म और जाति के खेल में नही उलझाया गया तो वो विकास की बात करेगी। वो पूछेगी कि इलाके में सड़क और बिजली, पानी और अस्पताल क्यों नहीं है। उनके बच्चों को रोजगार क्यों नहीं मिल रहा और आखिर यह महंगाई क्यों बढ़ती जा रही है। जाहिर है यह सारे सवाल राजनेताओं और सत्ता को बहुत परेशान करने वाले हैं। इनसे उपाय पाने का एक ही तरीका उनको समझ आता है कि आमजन को धर्म और जाति के खेल में उलझा दो। देश में धर्म अफीम के नशे की तरह काम करता है। लिहाजा जनता इसी में उलझी रहती है और नेताओं का काम आसान रहता है।

इसके अलावा सत्ता उन आवाजों को भी बंद करने की साजिश लगातार करती रहती है जो आम जन के मुद्दों को उठाती रहती है। सत्ता जानती है कि यह आवाजें भले ही थोड़ी हो पर लोकतंत्र में यह छोटी सी चिंगारी भी कभी बहुत बड़ा काम कर देती है। लिहाजा ऐसी आवाजों को हमेशा के लिये बंद करने के षड्यंत्र लगातार चलते रहते है। सिविल सोसायटी के लोग इसका शिकार होते रहते है। खतरनाक बात यह है कि मीडिया भी अब सत्ता के साथ इस खेल में शामिल हो गयी है। जहिर है यह सब लोकतंत्र के लिये बहुत शर्मनाक है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

संविधान की प्रधानता सुनिश्चित रहे

प्रभु चावला

भारतीय लोकतंत्र में दो महत्वपूर्ण संस्थाओं के इरादों पर जिरह चल रही है। कौन न्यायाधीशों का आकलन करेगा? कौन सरकार को शासित करेगा? ये प्रश्न न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच शक्ति संघर्ष को परिभाषित करते हैं। एक अपने अधिकार को बचाना चाहता है, तो दूसरा अपने अधिकार को थोपना चाहता है। अपनी इतिहास दृष्टि को आगे बढ़ाते सर्वदर्शी नेताओं के साथ सत्ता न्यायपालिका समेत सभी संस्थाओं पर अपने नियंत्रण के लिए प्रतिबद्ध है। परंपराएं, सावधानी और धैर्य की जगह कार्यकर्ता की आक्रामकता ने ली है।

असाधारण वकील रहे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ समेत प्रमुख नेताओं ने न्यायिक संरचना को परिभाषित करने के न्यायाधीशों के अधिकार पर प्रश्न उठाया है। तो यह वर्तमान कोलाहल है क्या? भारत के प्रधान न्यायाधीश के नेतृत्व में तीन सदस्यीय कॉलेजियम उच्च न्यायालयों के जजों के कॉलेजियम द्वारा प्रस्तावित नामों में से भावी जजों का चयन करते हैं। सर्वोच्च या उच्च न्यायालय किसी नाम पर तब तक विचार नहीं करते, जब तक हर उम्मीदवार के बारे में केंद्रीय एवं राज्य एजेंसियां तथा अपनी आंतरिक व्यवस्था से प्रासंगिक जानकारी नहीं आ जाती।

शक्ति के विभाजन और संतुलन पर विचार करते हुए संविधान निर्माताओं ने ऐसी स्थिति के बारे में शायद ही सोचा होगा कि विधायिका और कार्यपालिका न्यायपालिका से अधिक शक्तिशाली हो जायेंगे। हाल के दिनों में कार्यपालिका की अत्यधिक शक्ति तथा विधायिका द्वारा अपनी सीमाओं का अतिक्रमण पर न्यायिक निर्णयों पर बेहद तीखी प्रतिक्रियाएं आती रही हैं, लेकिन कोई भी पक्ष लंबित मामलों की बढ़ती संख्या, बड़े पैमाने पर न्यायिक रिक्तियां, खर्चीली व खास विधिक व्यवस्था, संस्थागत शुचिता का लोप तथा ढहता अदालती इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे मसलों के लिए जवाबदेही तय करने की कोशिश नहीं कर रहा।

अगर ऐसा है, तो अदालत फाइल न भेजे और खुद ही जजों को नियुक्त कर ले। इस पर सर्वोच्च न्यायालय नाराज हो उठा। रिपोर्टों के अनुसार, दूसरे सबसे वरिष्ठ जज संजय किशन कौल ने अटॉर्नी जेनरल आर वेंकटरमणी को कहा कि खबरों को तो उन्होंने अनदेखा किया है, पर ऐसा बयान उच्च पदस्थ व्यक्ति से आया है

और जरूरत होने पर वे फैसला भी करेंगे।

वर्ष 1991 के पहले उच्च न्यायालयों के जज उनके मुख्य न्यायाधीशों द्वारा चुने जाते है, पर उन पर अंतिम मुहर राज्यपाल और मुख्यमंत्री लगाते थे और फिर वे नाम केंद्र के पास आते थे।

कार्यपालिका नामों को निरस्त कर सकती थी, जिसके कारण अवांछित और राजनीतिक संपर्क के लोग न्यायिक व्यवस्था में घुसपैठ कर सकते थे। प्रस्तावित नामों के बारे में खुफिया रिपोर्ट अक्सर मुख्यमंत्रियों, केंद्रीय कानून मंत्री और गृह मंत्री के कार्यालयों में बनती थीं ताकि पसंदीदा नामों को चुना जा सके और विरोधियों को बाहर रखा जाए। बाद में तीन अलग-अलग निर्णयों में सर्वोच्च न्यायालय ने कार्यपालिका के अधिकारों को वापस ले लिया और कॉलेजियम की स्थापना कर दी। साल 1998 से 2014 तक नेता न्यायपालिका के खिलाफ विधायिका और कार्यपालिका के अधिकार हड़पने का आरोप लगाते रहे, जब सर्वोच्च न्यायालय सरकार के नामों को खारिज करने लगा। साल 2014 में नरेंद्र मोदी की भारी जीत के बाद राष्ट्रीय आयोग का कानून लागू हुआ। विधिक समुदाय के बड़े हिस्से का मानना है कि सरकार का सिस्टम बदलने का विचार इस तथ्य से प्रेरित है कि 2024 तक सर्वोच्च न्यायालय के 32 में से 19 जजों की तथा आधे से अधिक उच्च न्यायालयों की रिक्तियों की भर्ती प्रधान न्यायाधीश डीवाय चंद्रचूड़ के तहत होगी। कॉलेजियम में असहमति के कारण यूयू ललित के छोटे कार्यकाल में नियुक्तियां नहीं हो सकी थीं।

सर्वोच्च न्यायालय को लगता है कि कानून निर्धारित करने का उसे अधिकार है, जबकि कार्यपालिका इसे विधायिका की शक्तियों का अतिक्रमण मानती है। विधायिका के पूर्ण वर्चस्व के खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। निर्वाचित प्रतिनिधि विजयी दल को मिले 50 प्रतिशत से कम वोटों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सर्वोच्च न्यायालय जैसी स्वतंत्र संस्था विधायिका के कामों का परीक्षण करती है तथा संवैधानिक शुचिता सुनिश्चित करती है।

कानून बनाने और लागू करने वालों की तुलना में शीर्षस्थ भारतीय न्यायपालिका के प्रति अधिक भरोसा और सम्मान है। लोकतंत्र में निर्बाध शक्ति नुकसानदेह है। कार्यपालिका और न्यायपालिका दोनों पर यह बात लागू होती है। यदि इस लड़ाई का सौहार्दपूर्ण समाधान नहीं हुआ, तो दोनों का भरोसा कमजोर होगा और अराजक माहौल बनेगा। न्यायपालिका को अपने धब्बों को धोना चाहिए, कार्यपालिका सन्थानों की प्रतिष्ठा बनाये रखे तथा न्यायपालिका विधायिका को अपनी बात कहने दे।

नेपाल में चुनाव से नया सवेरा

अरविंद मोहन

चुनाव नतीजों की अंतिम तस्वीर साफ सामने आये बगैर यदि नेपाल में नयी सरकार बनाने की कवायद शुरू हो गयी है, तो इसकी वजह है कि अब नतीजों की दिशा नहीं बदल सकती। यहां 20 नवंबर को चुनाव हुए थे और काफी कुछ दांव पर था, सबसे अधिक तो हर पार्टी और लोकतंत्र की प्रतिष्ठा ही दांव पर थी। इधर पिछले कुछ वर्षों में नेपाल की राजनीति में जितना कुछ हुआ था, उसने यह शक भी पैदा कर दिया था कि क्या नेपाल बगैर राजशाही चल भी पायेगा,

क्या वहां की पार्टियां अपने समाज का मिजाज, वहां की क्षमता का बेहतर इस्तेमाल कर देश बनाने का विचार रखती भी हैं या हवाई नारों और घटिया आचरण से इस गरीब मुल्क के लोगों को सब्जबाग दिखा कर कुछेक लोगों के लिए लूट और सत्ता सुख भोगने का उपकरण भर हैं? हर पार्टी की प्रतिष्ठा गिरी थी। इसमें वे नेता और पार्टी लोगों की नजर में ज्यादा ही गिरे थे, जो किसी भी तरह भारत की तरफ झुके हुए थे। दो सौ पचहत्तर (275) सीटों वाले नेपाली संसद की 165 सीटों का नतीजा तो हर सीट पर सर्वाधिक मत वाले उम्मीदवार की जीत से तय होना है, जबकि बाकी 110 सीटें पार्टियों को मिले मत के अनुपात से बंटनी हैं। आखिरी हिसाब आने तक जितने नतीजे आये थे, उनसे साफ हो गया था कि नेपाली कांग्रेस की अगुआई वाला पांच दलों का गठबंधन बहुमत पा चुका है। शुरू में लोगों को एक खतरा लग रहा था कि सबसे ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने के चलते कम्युनिस्ट पार्टी नेपाल- यूएमएल आखिर में आगे आ सकती है।

ओली का रुख भारत के प्रति अनुदार है, इसलिए भी इस नतीजे की कल्पना से भारत के जानकार डरते थे। उन्होंने कालापानी, लिंपियाधुरा और लिपुलेख जैसे इलाके नेपाल के अधीन लाने की घोषणा के साथ चुनाव प्रचार शुरू भी किया था। उनको चीन का साथ ज्यादा सुहाता है जिसकी बड़ी वजह शायद भारत को चिढ़ाना रहा है। भारत की मुश्किल यह रही है कि वह अभी हाल तक नेपाल राजशाही को ज्यादा करीबी पाता था। फिर वह नेपाली कांग्रेस को अपना मानता था, जिसकी कीमत भी नेपाली कांग्रेस को चुकानी पड़ी थी। वैसे उनके अपने झगड़े, भ्रष्टाचार और नेताओं का आचरण उनकी प्रतिष्ठा गिराने के लिए पर्याप्त थे। यही हाल बाद के समय में मित्र बने माओवादी दल का भी था। पर सबसे बुरा हाल मधेशी दलों का था, जिनका आचरण भी हल्का रहा और जिन्होंने आपसी लड़ाई भी खूब की। यही कारण है कि 51 प्रतिशत जनसंख्या के बावजूद मधेशी लोग एक बार फिर राजनीतिक रूप से हाशिए पर पहुंच गये हैं, पर मधेश को एक जैसा प्रदेश और वहां के पूरे समाज को भारतीय समाज का एक विस्तार भर मानना भी बड़ी गलती है। इस बार भी ऐसा हुआ है कि दो बड़ी पार्टियों के विजयी गठबंधन का हिस्सा होने के बावजूद मधेश की छोटी पार्टियों ने छिटपुट सीटें ही जीती हैं। राजनीतिक अस्थिरता के दौर में यह संख्या भी महत्वपूर्ण हो सकती है, पर प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा ने इस चुनाव में और उससे पहले गठबंधन बनाने में जो समझदारी दिखाई है, उससे उम्मीद बंधती है कि आगे की स्थितियों को भी वे और यह गठबंधन बेहतर ढंग से संभालेगा।

असल में यह समझ ही इस बार के नेपाल चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है कि ऊंचे-ऊंचे आदर्श और वैचारिक नारों की जगह गठबंधन ही नेपाली समाज और राजनीति के लिए सबसे उपयुक्त व्यवस्था है। जब समाज इतनी विविधता से भरा हो और उसके कार्य-व्यापार में परस्पर सहयोग और मेल-मिलाप ही सबसे प्रबल गुण हैं, तो गठबंधन की राजनीति ही उसके सबसे उपयुक्त है। कभी नेपाली कांग्रेस की पहुंच समाज के हर वर्ग और क्षेत्र तक थी, पर उसके कमजोर पड़ने के साथ बिखराव बढ़ा।अब यदि उसकी पहल पर पांच दलों का गठबंधन बना और एकजुट चुनाव लड़ा गया, तो यह नयी शुरुआत है। इस गठबंधन में नेपाली कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी है, पर प्रतिपक्षी गठबंधन की तरह यह एकतरफा नहीं थी। इसकी आधी सीटें साझीदारों के पास रहीं। दूसरे, इस बार नेपाली कांग्रेस ने नया नेतृत्व विकसित करने की कोशिश की है। तीसरे, देउबा के साथ माओवादी नेता प्रचंड और एमाले नेता माधव नेपाल का अच्छा मेल है। ऐसा मेल ओली के नेतृत्व वाले गठबंधन में नहीं दिखा। यदि चुनाव होंगे और लोकतंत्र अपनी रंगत में आयेगा, तो उसमें दूसरी चीजें भी निकलेंगी हीं। इस चुनाव में गठबंधन राजनीति का उभार, नेतृत्व का तालमेल, नये नेतृत्व के उभरने और मधेशी पार्टियों एवं मधेश की बिखराव वाली राजनीति का सिमटना बड़ा बदलाव है, तो गीत और संगीत की दुनिया में रचे-बसे रवि लामछिने की नेतृत्व वाली स्वतंत्र पार्टी के उदय ने सबको उनकी राजनीति को गंभीरता से लेने को मजबूर किया।

काठमांडू समेत शहरी सीटों पर उनकी पार्टी के प्रदर्शन ने सभी स्थापित दलों के नेताओं को चिंतित किया। चुनाव मैदान में इस बार राजतंत्र की पक्षधर पार्टियां और नेता भी थे, पर उनका प्रदर्शन पहले से खराब हुआ है। इसलिए यह कहने में कोई हर्ज नहीं है कि इस बार के चुनाव दबावों के बावजूद बेहतर हुए हैं, बेहतर नतीजे लेकर आये हैं और बेहतर भविष्य की ओर इशारा करते हैं। वर्ष 1990 के बाद शुरू हुए लोकतांत्रिक प्रयोग में कभी इतनी उम्मीद भरी चीजें नहीं दिखी थीं।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस पर विशेष

करें ऊर्जा संरक्षण और बनें स्मार्ट नागरिक

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस का उद्देश्य

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस हर साल एक विशेष विषय के साथ कुछ लक्ष्यों और उद्देश्यों को ध्यान में रखकर लोगों के बीच अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये मनाया जाता है। यह लोगों के बीच जीवन के हर क्षेत्र में ऊर्जा संरक्षण के महत्व का संदेश भेजने के लिए मनाया जाता है। ऊर्जा संरक्षण की प्रक्रिया को बढावा देने के लिये पूरे देश में बहुत से कार्यक्रमों जैसे- विचार विमर्श, सम्मेलनों, वाद-विवाद, कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं का आयोजन करना। अत्यधिक और फालतू ऊर्जा के उपयोग के स्थान पर कम ऊर्जा के प्रयोग के लिये लोगों को प्रोत्साहित करना। ऊर्जा की खपत में कमी और कुशलता पूर्वक उपयोग करने के लिये लोगों को प्रोत्साहित करना।

पूरे भारत में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस लोगों द्वारा हर साल 14 दिसम्बर को मनाया जाता है। भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम वर्ष 2001 में ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) द्वारा निष्पादित (स्थापित) किया गया। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो एक संवैधानिक निकाय है जो भारत सरकार के अंतर्गत आता है और ऊर्जा का उपयोग कम करने के लिए नीतियों और रणनीतियों के विकास में मदद करता है। भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम का उद्देश्य पेशेवर, योग्य और ऊर्जावान प्रबंधकों के साथ ही लेखा परीक्षकों को नियुक्त करना है जो ऊर्जा दक्षता परियोजनाओं को लागू करने और ऊर्जा, परियोजनाओं, नीति विश्लेषण, वित्त प्रबंधन में विशेषज्ञ हों। भारत में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस लोगों को ऊर्जा के महत्व के साथ ही साथ बचत, और ऊर्जा की बचत के माध्यम से संरक्षण बारे में जागरुक करना है। ऊर्जा संरक्षण का सही अर्थ है ऊर्जा के अनावश्यक उपयोग को कम करके कम ऊर्जा का उपयोग कर ऊर्जा की बचत करना है। ऊर्जा संरक्षण की योजना की दिशा में अधिक प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करने के लिए हर इंसान के व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण निहित होना चाहिए।

ये हैं ऊर्जा संरक्षण उपाय

थर्मल पर्दे, स्मार्ट खिड़कियों के अलावा खिड़कियाँ ऊर्जा का संरक्षण करने में सबसे बड़ा कारक है।

ऊर्जा की एक बड़ी मात्रा को प्राकृतिक रोशनी और कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट लैंप या सीएफएल से (15ङ्ग और अन्य साधनों के द्वारा ऊर्जा खपत का केवल 1/4वां भाग की खपत), फ्लोरोसेंट बल्ब, रैखिक फ्लोरोसेंट, सौर स्मार्ट टॉर्च, स्काई लाइट, खिड़कियों से प्रकाश व्यवस्था और सौर लाइट का प्रयोग करके बचाया जा सकता है।

जल संरक्षण भी बेहतर ऊर्जा संरक्षण का नेतृत्व करता है। लोगों के द्वारा हर साल लगभग हजारों गैलन पानी बर्बाद किया जाता है जिसकी विभिन्न संरक्षण के साधनों जैसे- 6 जीपीएम या कम से कम प्रवाह वाले फव्वारों, बहुत कम फ्लश वाले शौचालय, नल जलवाहक, खाद शौचालयों का प्रयोग करके बचत की जा सकती है। पृथक्करण सर्दी के मौसम में थर्मल को कम करने के साथ ही गर्मियों में थर्मल प्राप्त करके भी ऊर्जा के संरक्षण में बहुत अहम भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिये, प्राकृतिक ऊन पृथक्करण, घर पृथक्करण, कपास पृथक्करण, रेशा पृथक्करण, थर्मल पृथक्करण आदि।

ये भी जानना है बहुत जरूरी

जीवाश्म ईंधन, कच्चे तेल, कोयला, प्राकृतिक गैस आदि दैनिक जीवन में उपयोग के लिए पर्याप्त ऊर्जा उत्पन्न करते हैं लेकिन दिनों-दिन इनकी बढ़ती मांग प्राकृतिक संसाधनों के कम होने का भय पैदा करता है। ऊर्जा संरक्षण ही केवल एक ऐसा रास्ता है जो ऊर्जा के गैर- नवीनीकृत साधनों के स्थान पर नवीनीकृत साधनों को प्रतिस्थापित करता है। ऊर्जा उपयोगकर्ताओं को ऊर्जा की कम खपत करने के साथ ही कुशल ऊर्जा संरक्षण के लिये जागरुक करने के उद्देश्य से विभिन्न देशों की सरकारों ने ऊर्जा और कार्बन के उपयोग पर कर लगा रखा है। उच्च ऊर्जा उपभोग पर कर ऊर्जा के प्रयोग को कम करने के साथ ही उपभोक्ताओं को एक सीमा के अन्दर ही ऊर्जा का प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

ऊर्जा सुरक्षा में नागरिकों की क्या है भूमिका

भारत के सभी और प्रत्येक नागरिक कुशलतापूर्वक ऊर्जा के उपयोग और भविष्य के लिये ऊर्जा की बचत के बहुत से तरीकों के बारे में जानते हैं। वो सभी नियमों, विनियमों और ऊर्जा दक्षता का समर्थन करने के लिये भारत सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों का पालन करते हैं। भारत के नागरिक 11वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान ऊर्जा के उपयोग को कम करने के अभियान में प्रत्यक्ष अंशदान का भुगतान कर रहे हैं। देश में सकारात्मक बदलाव लाने और आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये बच्चे बहुत बड़ी उम्मीद हैं।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस कैसे मनाया जाता है

पूरे भारत में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण के अभियान को और प्रभावशाली और विशेष बनाने के लिये सरकार द्वारा और अन्य संगठनों द्वारा लोगों के बीच में बहुत सी ऊर्जा संरक्षण प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है क्योंकि वो ही इस अभियान का मुख्य लक्ष्य है। कई जगहों पर संगठनों के छात्रों या सदस्यों द्वारा ऊर्जा संरक्षण दिवस पर स्कूल, राज्य, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न चित्रकला प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण अभियान भारत में ऊर्जा संरक्षण की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए विद्युत मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया राष्ट्रीय जागरूकता अभियान है। छात्रों के लिये कई स्तरों पर चित्रकारी प्रतियोगिताओं का आयोजन इस अभियान की मुख्य गतिविधियों में से एक है जो इस अभियान में भाग लेने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों के लिये ऊर्जा संरक्षण के महत्व के साथ साथ शिक्षित करने में मदद करता है। ये प्रतियोगिता घरेलू क्षेत्रों के लोगों को भी जागरुक करने में मदद करती है। हर एक प्रतिभागी को एक विषय दिया जाता है जैसे- अधिक सितारें, अधिक बचत, वर्तमान में ऊर्जा का अपव्यय, भविष्य में ऊर्जा की कमी और ऊर्जा का बचाव भविष्य का बचाव आदि। प्रतियोगी अपने चित्रों को पेंसिल के रंगों, मोम के रंगों और पानी के रंगों आदि का प्रयोग करके अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने और जीतने वाले छात्रों को भागीदारी प्रमाण पत्र, योग्यता प्रमाण-पत्र और या नकद पुरस्कार 33,000 रुपये प्रति राज्य दिया जाता है। 14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के समारोह कार्यक्रम में विद्युत मंत्रालय द्वारा सम्मानित राज्य के विजेताओं के बीच यह राशि बाँट दी जाती है।

डैंड्रफ के लिए बेस्ट हैं ये नुस्खे

सर्दियों में डैंड्रफ होना बहुत ही आम बात है इससे छुटकारा पाने के लिए हम आपको आसान नुस्खे बता रहे हैं जिसकी मदद से आप डैंड्रफ से छुटकारा पा सकते हैं।

टी ट्री ऑयल: टी ट्री ऑयल में एंटीमाइक्रोबियल्स प्रॉपर्टीज होती है जो रूसी की गंभीरता और लक्षणों को कम करने में मदद कर सकते हैं। कुछ एक्सपर्ट टी ट्री ऑयल युक्त शैंपू का इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं, यह डैंड्रफ को कम करता है।

नारियल तेल: नारियल तेल स्किन हाइड्रेशन को ठीक करता है, स्कैल्प की ड्राइनस को भी कम करता है। यह एक्जिमा और रूसी जैसे लक्षणों से मुकाबला करने के लिए भी जाना जाता है। नारियल तेल से स्कैल्प की मसाज करना बालों की ग्रोथ बढ़ाने के साथ रूसी को कम करता है।

एलोवेरा: एलोवेरा एक प्राकृतिक जड़ी बूटी है जिसमें एंटीबैक्टीरियल और एंटी फंगल गुण पाए जाते हैं, जो सूजन को कम करने के साथ-साथ स्कैल्प पर रूसी को कम कर सकते हैं। हालांकि एलोवेरा पर और अधिक शोध की आवश्यकता है।

हंसना मना है

संता पार्टी से रात को देर से घर गया। अगले दिन दोस्तों ने उससे पूछा : बीवी ने कुछ कहा तो नहीं? संता : न न, कुछ खास नहीं, ये दो दांत तो मुझे वैसे भी निकलवाने थे!

हाथी ने चींटी को प्रपोज किया। चींटी ने जवाब दिया, मैं भी तुम से प्यार करती हूं। हाथी : तो फिर शादी से क्यों मना करती हो। चींटी : मैं तुम से कितनी बार कह चुकी हूं! मेरे घर में इंटर-कास्ट शादी तो हो सकती है लेकिन इंटर-साइज नहीं।

पिता : बेटा, 5 के बाद क्या आता है? बेटा- 6 और 7 पिता- वाह मेरा समझदार बेटा। और 6,7 के बाद? बेटा- 8,9,10 पिता- क्या बात है बेटा वाह, और उसके बाद? बेटा- गुलाम, बेगम, बादशाह।

टीचर : पानी मे रहने वाले 5 जीओ के नाम बताओ? पप्पू : मेंडेक टीचर : व्हेरि गुड, बाकी चार बोलो.. पप्पू : उसकी मा, उसका बाप, उसकी बेहन और उसका भाई!

पप्पू जलेबी बेच रहा था, लेकिन कह रहा था आलू ले लो आलू ले लो... राहगीर- लेकिन ये तो जलेबी है, पप्पू- चुप हो जा! वरना मक्खियां आ जाएंगी।

मास्टर जी : शांति किसके घर में रहती है...? पप्पू : जिस घर में पति और पत्नी दोनों मोबाइल चलाते हैं...!!!

कहानी — मूर्खों का बहुमत

किसी जंगल में एक उल्लू रहता था। वह दिनभर एक पेड़ पर अपने घोंसले में छिपकर रहता था। सिर्फ रात होने पर ही वह भोजन के लिए बाहर निकलता था। एक बार दोपहर का समय था और बहुत तेज धूप थी। तभी कहीं से एक बंदर आया और वह उल्लू के घोसले वाले पेड़ पर आकर बैठ गया। गर्मी और धूप से परेशान बंदर ने कहा कि ऊफ, बहुत गर्मी है। बंदर की बात को उल्लू ने भी सुन लिया। उससे रहा नहीं गया और बीच में ही बोल पड़ा कि यह तुम झूठ कह रहे हो? सूर्य नहीं, बल्कि अगर चंद्रमा के चमकने की बात कहते तो मैं इसे सच मान लेता। बंदर बोला कि भला दिन में चंद्रमा कैसे चमक सकता है। वह तो रात में चमकता है और यह दिन का समय है, तो दिन में सूर्य ही चमकेगा। यही कारण है कि सूर्य की तेज रोशनी की वजह से बहुत ज्यादा गर्मी हो रही है। उस बंदर ने उल्लू को अपनी बात समझाने का बहुत प्रयास किया कि दिन में सूरज ही चमकता है चंद्रमा नहीं, लेकिन उल्लू भी अपनी ही जिद पर अड़ा था। इसके बाद उल्लू ने कहा कि चलो, हम दोनों मेरे एक मित्र के पास चलते हैं, वही इसका निर्णय करेगा। बंदर और उल्लू दोनों एक दूसरे पेड़ पेड़ पर गए। उस दूसरे पेड़ पर उल्लुओं का एक बड़ा झुंड रहता था। उल्लू ने सभी को बुलाया और उनसे कहा कि दिन में आकार में सूर्य चमक रहा है या नहीं यह तुम सब मिलकर बताओ। उल्लू की बात सुनकर उल्लुओं का पूरा झुंड हंसने लगा। वह बंदर की बात का मजाक उड़ाने लगें। उन्होंने कहा कि नहीं, तुम बेवकूफों जैसी बात कर रहे हो। इस समय आकार में तो चंद्रमा ही चमक रहा है और आकाश में सूर्य के चमकने की झूठी बात बोलकर हमारी बस्ती में झूठ का प्रचार मत करो। उल्लुओं के झुंड की बात सुनने के बाद भी बंदर अपनी ही बात पर अड़ा हुआ था। जिस देखर सभी उल्लू गुस्सा हो गए और वे सारे के सारे बंदर को मारने के लिए उसपर झपट पढ़े। दिन का समय था और उल्लुओं को कम दिखाई दे रहा था इसी वजह से बंदर वहां से बचकर भाग निकलने में कामयाब हो गया और उसने अपनी जान बचाई।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

तली-भुनी चीज़ों से दूर रहें और नियमित व्यायाम करते रहें। घरेलू सुख-सुविधा की चीज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्चा न करे। पिता का तल्ख़ बर्ताव आपको नाराज़ कर सकता है।

तुला

जो उधारी के लिए आपके पास आएं, उन्हें नजरअन्दाज करना ही बेहतर रहेगा। पारिवारिक मोर्चे पर चीजें अच्छी रहेंगी और अपनी योजनाओं के लिए आप पूरे सहयोग की उम्मीद कर सकते है।

वृषभ

आपको जीवन में सभी कठिन परिस्थितियों के माध्यम से अपने माता-पिता का पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा। प्रेम के मोर्चे पर जो लोग सूनापन महसूस कर रहे हैं।

वृश्चिक

छात्रों के लिए एक अनुकूल दिन है क्योंकि वे प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकते है। स्थावर संपत्ति की कार्यवाही को स्थगित करना आप के हित में रहेगा।

मिथुन

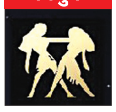

क्षणिक गुस्सा विवाद और दुर्भावना की वजह बन सकता है। मनोरंजन और सौन्दर्य में इजाफे पर जरुरत से ज़्यादा वक्त न खर्च करे।

धनु

इससे पहले कि नकारात्मक विचार मानसिक बीमारी का रूप ले लें, आप उन्हें ख़त्म कर दे। ऐसा आप किसी दान-पुण्य के काम में सहभागिता के ज़रिए कर सकते हैं।

कर्क

आज आपके लिए सभी ग्रह सितारे आपके पक्ष के बने हुए है जिस काम में भी हाथ डालोगे उसमे सफलता जरूर मिलेगी। आज के दिन घूमने फिरने की योजना बन सकती है।

मकर

लंबे समय से चल रही परेशानियों से आज छुटकारा मिल सकता है। आगे बढ़ने के बजाए अपने सभी आने वाले कार्यों को खत्म करना बुद्धिमान हो सकता है।

सिंह

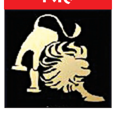

आपकी इच्छा-शक्ति को प्रोत्साहन मिलेगा, क्योंकि आप बहुत पेचीदा हालात से निकलने में कामयाब रहेंगे। भावुक फैसला लेते वक्त अपनी तार्किकता न छोड़े।

कुम्भ

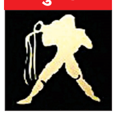

भावनात्मक तौर पर बहुत अच्छा दिन नहीं होगा। आर्थिक परेशानियों के चलते आपको आलोचना और वादविवाद का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

प्यार के मामलों में सफलता मिलेगी। नए कार्यों की शुरुआत करना शुभ रहेगा। अपनी व्यक्तिगत भावनाएं और गोपनीय बातों को अपने प्रिय से बांटने का आज सही समय है।

मीन

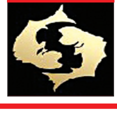

आज आप सकारात्मक ऊर्जा से भरे रहेंगे, जो आपके आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करेगा। स्वयं के काम से समय निकालकर परिवार के साथ ज्यादा वक्त बिताना संभव नहीं होगा।

बॉलीवुड मसाला

हेरा फेरी-3 में बाबू भइया और श्याम संग नजर आएंगे राजू?

फिल्म हेरा फेरी बॉलीवुड की पॉपुलर फिल्म फ्रेंचाइजी में से एक है। इन दिनों फिल्म फ्रेंचाइजी का तीसरा पार्ट हेरा फेरी 3 लगातार चर्चा में बना हुआ है। जब से फिल्म में अक्षय कुमार की जगह कार्तिक आर्यन की लेने की खबरें सामने आई हैं तब से ये मुद्दा काफी गरम है। दरअसल, परेश रावल ने कहा था कि कार्तिक आर्यन फिल्म हेरा फेरी 3 का हिस्सा होंगे। वहीं, अक्षय कुमार ने भी कह दिया था कि फिल्म की स्क्रिप्ट के चलते वह खुद को इससे अलग कर रहे हैं। अक्षय कुमार के फैंस मेकर्स के इस फैसले से काफी नाराज दिखे। फैंस ने यहां तक कह दिया था कि नो अक्षय नो हेरा फेरी। हालांकि, अब लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, अक्षय कुमार के फैंस गुड न्यूज है। दरअसल, मेकर्स एक बार फिर अक्षय कुमार को हेरा फेरी 3 में लेने की कोशिश कर रहे हैं।

हेरा फेरी 3 में अक्षय कुमार हो सकती है वापसी

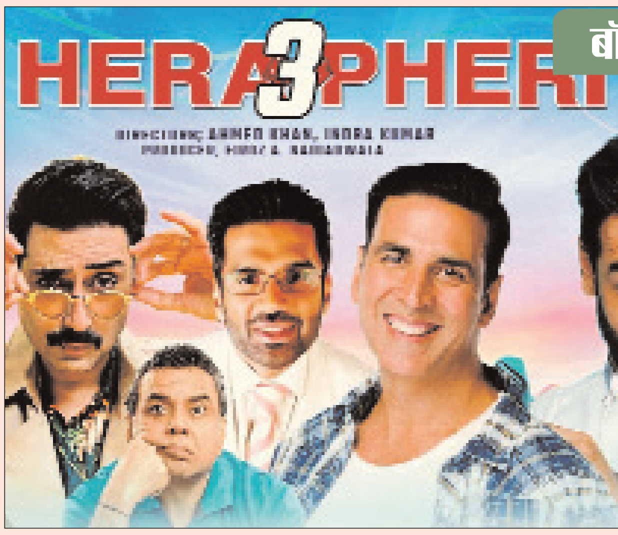

पिंकविला की रिपोर्ट में बताया गया है कि अक्षय कुमार की फिल्म हेरा फेरी 3 में वापसी हो सकती है। हेरा फेरी 3 में अक्षय कुमार को वापस लाने के लिए फिल्म के निर्माता फिरोज नाडियाडवाला बातचीत कर रहे हैं। फिरोज नाडियाडवाला पिछले 10 दिनों में अक्षय कुमार से कई बार मुलाकात कर चुके हैं। मेकर्स फिल्म की स्क्रिप्ट बदलाव कर अक्षय कुमार की वापसी कराने की सोच रहे थे। अक्षय कुमार फिल्म मेकर्स के साथ बातचीत में सहयोग कर रहे हैं।

अक्षय कुमार की आने वाली फिल्में

वर्क फ्रंट की बात करें अक्षय कुमार की साल 2022 में उनकी पांच फिल्में रिलीज हो चुकी हैं। इनमें बचन पांडे, सम्राट पृथ्वीराज, रक्षा बंधन, कठपुतली और राम सेतु शामिल हैं। हालांकि, उनकी एक भी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नहीं चली है। अब अक्षय कुमार सेल्फी, गोरखा, ओएमजी 2, कैप्सूल गिल, सोरारई पोटरु के रीमेक में काम करते नजर आएंगे।

बॉलीवुड मन की बात

खटाई में पड़ सकती है सलमान की नो एंट्री!

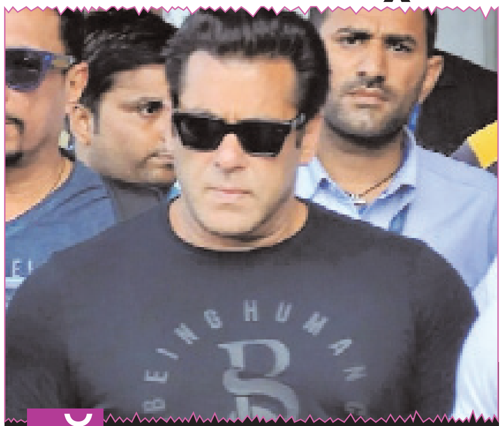

बॉलीवुड के जाने-माने स्टार सलमान खान इन दिनों अपनी टीवी शो बिग बॉस 16 के अलावा फिल्मों को लेकर भी चर्चा में बने हुए है। सलमान खान साल 2023 में टाइगर 3 और किसी का भाई किसी की जान के साथ बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने वाले है। इसके अलावा और भी फिल्मों से सलमान खान का नाम जुड़ रहा है। इसी में से एक नाम फिल्म नो एंट्री की सीक्वल नो एंट्री 2 का भी है। इस फिल्म को लेकर लगातार कई तरह की खबरें सामने आ रही है। पहले खबर सामने आई की इस फिल्म को रोक दिया गया, लेकिन बाद में इस फिल्म की शूटिंग से जुड़ी खबरें सामने आने लगी। अब फिर से ये फिल्म चर्चा में आ गई है।

सलमान खान की फिल्म नो एंट्री-2 का फैंस काफी लंबे समय से इंतजार कर रहे है। फिल्म डायरेक्टर अनीज बमी नो एंट्री-2 की स्क्रिप्ट के साथ तैयार है। इसके अलावा फिल्म बोनी कपूर भी अब इस फिल्म को बनाने के लिए तैयार है। माना जा रहा था कि इस फिल्म की शूटिंग साल 2023 के जनवरी महीने से शुरू हो जाएगी, लेकिन इसी बीच एक ऐसी खबर सामने आई है। जिसने सबको हैरान कर दिया है। पिंकविला की रिपोर्ट के मुताबिक सलमान खान साल 2023 के अपने नए प्रोजेक्ट के लिए दूसरे फिल्म डायरेक्टर्स के साथ बात कर रहे है। जिसके बाद माना जा रहा है कि ये फिल्म ठंडे बस्ते में जा सकती है। सलमान खान फिल्म टाइगर-3 और किसी का भाई किसी की जान में नजर आने वाले है। फिल्म टाइगर-3 में उनके साथ कटरीना कैफ दिखाई देंगी, तो वहीं वो किसी का भाई किसी की जान में पूजा हेगड़े और अब्दु रोजिक के साथ नजर आने वाले है।

स्प्लिट्सविला-14 से उर्फी जावेद की छुट्टी

स्प्लिट्सविला-14 बीते कुछ हफ्ते से लगातार सुर्खियां बटोर रहा है। एमटीवी पर ऑनएयर होने वाले इस रियलिटी शो में आए दिन कोई ना कोई बड़ा ट्विस्ट आ रहा है। शो के लेटेस्ट एपिसोड में वाइल्ड कार्ड के जरिए एंट्री लेने वाली कंटेस्टेंट उर्फी जावेद ने लोगों को बड़ा झटका दिया है। दरअसल सनी लियोनी और अर्जुन बिजलानी ने डंपिग जोन में खड़े सभी कंटेस्टेंट्स को बताया कि उनके बीच एक मिस्चिफ मेकर मौजूद हैं, जिसके चलते गेम कभी भी पलट सकता है। हर कोई हक्का-बक्का रह गया और तभी उर्फी जावेद ने खुद ही बता दिया कि मिस्चिफ मेकर कोई और नहीं बल्कि वहीं है। इसी के साथ उर्फी कंटेस्टेंट्स को कई बड़े झटके एक साथ देती हैं।

शनिवार को स्प्लिट्सविला-14 के डंपिक जोन में कई जोड़ियां मौजूद थीं। विनिंग टीम ने सोहेल और सौम्या को शो से बाहर करने का फैसला लिया, लेकिन यहां पर उर्फी जावेद ने पूरा गेम पलट दिया। उर्फी ने सभी को बता दिया कि वह इस शो की मिस्चिफ मेकर हैं और वह यहां पर कुछ ही दिन के लिए मौजूद थीं। उर्फी जावेद ने यह भी बताया कि वह इस शो में कंटेस्टेंट्स के लिए मुसीबत बनकर आई थी ताकि सभी का गेम खराब कर सकें। इसी के साथ उन्होंने अपनी पॉवर का इस्तेमाल करते हुए सोहेल को डंप होने से बचा लिया और सौम्या को शो से बाहर करने का फैसला लिया। इसके बाद उर्फी जावेद ने कहा, मिस्चिफ मेकर बनकर मैंने कितनी आग लगाई कि कोई भी अंदाजा ही नहीं लगा पाया। फिलहाल तो मैंने कुछ ही समय में यहां अच्छा बॉन्ड बनाया। कशिश के साथ मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं आशा करती हूं कि बाहर भी हमारी दोस्ती होगी। इसी के साथ उर्फी जावेद ने यह इशारा भी दे डाला है कि हो सकता है कि शो में उनकी वापसी जल्द ही हो जाए।

पेड़ से पत्ते नहीं खा पा रहे थे हिरण तो बंदर ने ऐसे की दोस्त की मदद

जंगली जानवर भी इंसानों की तरह ही एक दूसरे के साथ दोस्ती रखते हैं और जरूरत पड़ने पर उनका साथ भी देते हैं। फिर भले ही वह जानवर उनकी प्रजाति का क्यों न हो। ऐसा ही एक वीडियो आज भारतीय वन सेवा के अधिकारी सुशांत नंदा ने अपने ट्विटर अकाउंट से शेयर किया है। जिसमें एक बंदर अपने हिरण दोस्तों की मदद करता देखा जा सकता है। इस वीडियो को देखकर आपको भी विश्वास हो जाएगा कि जंगली जानवर भी इंसानों की तरह ही अपने दोस्तों की सहायता करते हैं। सुशांत नंदा ने इस वीडियो को कुछ देर पहले ही शेयर किया है। जिसे अब तक करीब 2000 बार देखा जा चुका है। साथ ही 200 से ज्यादा लाइक्स और कई रिट्वीट भी इस वीडियो पर आ चुके हैं। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि दो हिरण एक पेड़ के नीचे घास चर रहे हैं। इसी दौरान वे पेड़ की डाली से पत्ते खाने की कोशिश करने लगते हैं। लेकिन डाली ऊंची होने की वजह से उनकी गर्दन पत्तों तक नहीं पहुंचती। उसके बाद पेड़ पर बैठा एक बंदर अपनी दोस्तों की मदद के लिए आता है। बंदर डाली के ऊपर आकर ऐसे बैठता है जिससे डाली नीचे झुक जाए और हिरण आसानी से पत्तों को खा सकें। जैसे ही बंदर डाली के ऊपर आता है पत्ते नीचे की ओर झुक जाते हैं और उसके बाद हिरण आसानी से पत्तों को खाने लगते हैं। इस वीडियो को तमाम यूजर्स ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। योगेश जैन नाम के एक यूजर ने लिखा, प्रकृति ने हमें कितनी चीजें सिखाई।

अजब-गजब | अधिकारियों ने महिला को स्थाई निवास की नहीं दी परमिशन

न्यूजीलैंड में मोटापा बना जीवनी की राह में रोड़ा

आपने डॉक्टरों को ये कहते हुए सुना होगा कि अगर आप मोटे हैं तो फिर आप कई बीमारियों को बुलावा दे रहे हैं। ये सच है कि अगर आपका वज़न ज्यादा है तो फिर आपको स्वास्थ्य संबंधी कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन क्या मोटे होने के चलते आपको कोई देश अपने यहां रहने से मना कर सकता है? आप कहेंगे ये क्या मज़ाक है। लेकिन ये सच है। साउथ अफ्रीका की एक महिला ने दावा किया है कि ज्यादा मोटे होने चलते उन्हें न्यूज़ीलैंड से वापस जाने के लिए कह दिया गया था।

ब्रिटिश अखबार डेली मिरर के मुताबिक मोंडेलिया बेज़ुइडेनहॉट नाम की ये महिला अपने पति और छोटे बच्चों के साथ अपना नया जीवन शुरू करने के लिए 2018 में दक्षिण अफ्रीका के पोर्ट एलिजाबेथ से न्यूज़ीलैंड के पामर्स्टन नॉर्थ चली गई। अपने परिवार के साथ स्थायी रूप से रहने का रास्ता तलाशते हुए, उसने यहां रहने के लिए आवेदन किया। लेकिन अधिकारियों ने उसके आवेदन को खारिज कर दिया। वजह ये बताई गई कि उनका बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) 'बहुत अधिक' है। बीएमआई के आधार पर ये तय होता है कि लंबाई के हिसाब से वज़न ठीक है या नहीं।

30 किलो घटाने को कहा

मोंडेलिया ने दावा किया कि अधिकारियों ने उन्हें 30 किलो वजन कम करने के लिए कहा। साथ ही कहा कि अगर वो ऐसा नहीं कर सकती हैं तो फिर न्यूज़ीलैंड से बाहर चली जाएं। अधिकारियों ने कहा कि महिला का अतिरिक्त वजन न्यूजीलैंड की सरकार पर बोझ बढ़ा सकता है।

128 किलो की थी मोंडेलिया

मोंडेलिया ने कहा कि एक अपील पर विशेष छूट दिए जाने के बाद उन्हें देश में रहने की अनुमति दी गई। बाद में मोंडेलिया ने अपने स्कोर से 10 बीएमआई अंकों की भारी गिरावट की। उनका वजन उन दिनों 128 किलोग्राम था। उसने दक्षिण अफ़्रीकी मीडिया से कहा, 'मैं हमेशा डोना क्लेयर महिलाओं की तरह एक प्लस-साइज़ मॉडल बनना चाहती थी, मैंने अपनी बेटी का नाम डोना-ली भी रखा है।'

भारत जोड़ो यात्रा के टेंट में आग लगाने की कोशिश हुई नाकाम

» पुलिस ने चार आरोपियों को दबोचा, जांच शुरू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सवाई माधोपुर। 350 दिन चलने वाली कांग्रेस नेता राहुल गांधी 'भारत जोड़ो यात्रा' इन दिनों राजस्थान में चल रही है। राहुल की यात्रा पूरे देश में काफी चर्चित हो रही है। लेकिन इस यात्रा को लेकर एक बड़ा मामला सामने आया। दरअसल, सोमवार की रात बामनवास विधानसभा क्षेत्र में भारत जोड़ो यात्रा के टोंड कैंप पर कुछ असामाजिक तत्वों ने आग लगाने की कोशिश की थी। हालांकि, ये असामाजिक तत्व आग लगाने में सफल नहीं हो पाए।

इस साजिश में शामिल चार आरोपियों को पुलिस ने हिरासत में भी ले लिया है। मामले की जानकारी कांग्रेस नेता ज्ञानचंद मीना ने मलारना डूंगर थाना को दी। उन्होंने बताया कि विगत रात तकरीबन 12 बजे भारत जोड़ो यात्रा के लिए टोंड गांव में खाना बनाया जा रहा था। इसी दरमियान कैंप पर लगे हुए टेंट में एक कार व 4-5 बाइक पर 10 से 15 लोग आए थे। साथ ही सभी लोग यात्रा में आग लगाने की साजिश रच रहे थे।

कांग्रेस नेता ज्ञानचंद ने बताया कि सभी लोग आमने-सामने बनाए गए बी व सी ब्लॉक में आग लगाने की योजना बना रहे थे। आरोपियों ने ध्यान भटकाने के लिए खाना बनाए जा रहे टेंट में कुछ गोवंश भी छोड़ दिए। मौके पर मौजूद कार्यकर्ता गोवंश को खदेड़ने के लिए आए। लेकिन वहां मौजूद एक कार्यकर्ता ने आरोपियों की बातें सुनी। आरोपियों द्वारा आपराधिक गतिविधियां अंजाम देने की भनक लगते ही कार्यकर्ता ने व्यवस्था देख रहे ज्ञानचंद को मामले से अवगत करवाया। ज्ञानचंद ने मामले की तत्काल सूचना मलारना डूंगर पुलिस को दी। जिसके बाद थाना प्रभारी राजकुमार मय जाप्ते मौके पर पहुंचे। पुलिस ने 4 लोगों को हिरासत में ले लिया है।

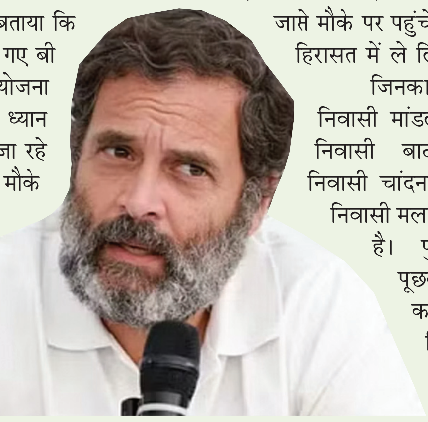

जिनका नाम ऋषिकेश मीणा निवासी मांडल गांव, बनवारी माली निवासी बाटोदा, ओमप्रकाश मीना निवासी चांदनहोली व धर्मराज मीणा निवासी मलारना डूंगर बताया जा रहा है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। वहीं कांग्रेस पदाधिकारियों ने रिपोर्ट दर्ज कर उचित कार्यवाही की मांग की है।

अब केरल में गवर्नर नहीं होंगे विवि के कुलाधिपति विस में पारित हुआ बिल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। अब केरल में भी गवर्नर को यूनिवर्सिटी के चांसलर पद से हटाया जा सकेगा। मंगलवार को केरल विधानसभा में इससे सम्बंधित यूनिवर्सिटी लॉ संशोधन बिल पास किया गया। अब यह बिल मंजूरी के लिए गवर्नर के पास भेजा जाएगा।

हालांकि, विपक्ष ने मांग की कि चांसलर नियुक्त करने के लिए एक समिति गठित की जानी चाहिए, जिसमें मुख्यमंत्री, विपक्ष के नेता और हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश शामिल हों। सरकार ने आंशिक रूप से मांग को स्वीकार कर लिया। कानून मंत्री पी राजीव ने कहा कि समिति में मुख्यमंत्री, विपक्ष के नेता और अध्यक्ष होंगे। विपक्ष ने भी इसे माना। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने इस मामले में पिछले महीने बयान दिया था कि इस अध्यादेश को लेकर मैं कुछ नहीं तय करूंगा। अगर राज्य सरकार मुझे निशाना बनाना चाह रही है तो मैं उस अध्यादेश को राष्ट्रपति को भेजूंगा। दरअसल, मीडिया ने उसने सवाल किया था कि क्या राज्यपाल अध्यादेश पर हस्ताक्षर करेंगे? इस पर आरिफ मोहम्मद खान ने कहा था कि इस पर विचार करने के बाद ही कोई निर्णय लिया जाएगा।

जस्टिस बेला त्रिवेदी ने बिलकिस बानो मामले से खुद को किया अलग

» दुष्कर्म-हत्या मामले के दोषियों की समय से पहले रिहाई पर होनी है सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दुष्कर्म और हत्या मामले के 11 दोषियों की समय से पहले रिहाई के फैसले को चुनौती देने वाली गुजरात दंगों की पीड़िता बिलकिस बानो के मामले में अब एक नई खबर सामने आ रही है। सुप्रीम कोर्ट की जज न्यायामूर्ति बेला एम त्रिवेदी ने इस मामले से खुद को अलग कर लिया है।

मंगलवार को जैसे ही न्यायामूर्ति अजय रस्तोगी और न्यायामूर्ति बेला एम त्रिवेदी की पीठ में मामले की सुनवाई शुरू हुई, न्यायामूर्ति रस्तोगी ने कहा कि उनकी बहन न्यायामूर्ति त्रिवेदी इस मामले की सुनवाई नहीं करना चाहती हैं। इसके साथ ही, न्यायमूर्ति रस्तोगी की अध्यक्षता वाली पीठ ने मामले को एक ऐसी पीठ के समक्ष सूचीबद्ध करने का आदेश दिया, जिसमें दोनों में से कोई जज न हो। हालांकि, पीठ ने न्यायमूर्ति त्रिवेदी के मामले से अलग होने का कोई कारण नहीं बताया।

गौरतलब है कि पीड़िता बिलकिस बानो ने सुप्रीम कोर्ट में दो याचिकाएं दायर की हैं। पहली याचिका में उन्होंने एक दोषी की अर्जी पर शीर्ष अदालत के 13 मई, 2022 के आदेश की समीक्षा की मांग की है। अदालत ने अपने आदेश में गुजरात सरकार से 9 जुलाई, 1992 की एक नीति के तहत दोषियों की समय से पहले रिहाई की याचिका पर विचार करने को कहा था। दूसरी याचिका में उन्होंने गुजरात सरकार के दोषियों को रिहा करने के फैसले को चुनौती दी है। जिस पर आज न्यायामूर्ति अजय रस्तोगी और न्यायामूर्ति बेला एम त्रिवेदी की पीठ में सुनवाई होनी थी, लेकिन न्यायामूर्ति त्रिवेदी ने खुद को सुनवाई से अलग कर लिया।

फोटो: 4पीएम

स्वागत गुजरात की शानदार जीत पर संसद में पीएम मोदी का स्वागत करते भाजपा के सदस्य।

चुनाव बहिष्कार की धमकी क्यों नहीं देता विपक्ष?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। क्या विपक्षी पार्टियां ये मान चुकी हैं कि मुद्दों पर वो हार गये हैं? नतीजों में वो हारने वाले हैं? इसलिए ईवीएम को बली का बकरा बनाया जाए? क्या अगर हार होती है तो खुद जिम्मेदारी न लें, बल्कि ईवीएम पर सारा दोष डाल दें? अगर ये सच हैं तो जब ईवीएम पर इतने सवाल तो विपक्ष चुनाव बहिष्कार की धमकी क्यों नही देता? इस विषय पर शाम 6 बजे परिचर्चा हुई! जिसमें वरिष्ठ पत्रकार अजय शुक्ला, शीतल पी सिंह, समाजिक कार्यकर्ता बालेंद्र वाघेला, किसान नेता डॉ. सुनीलम के साथ अभिषेक कुमार के साथ लम्बी चर्चा हुई।

बालेंद्र वाघेला ने कहा कि 2002 में एक कंप्लेन आई थी कच्छ के एक बूथ की उसमें जो कैंडिडेट खड़ा था इंडिपेंडेंट उसके ढाई सौ वोट थे। ढाई सौ हो तो उसके घर के ही थे लेकिन उसको एक भी वोट नहीं मिला। खुद का वोट भी नहीं मिला था। उसने फिर हमको कंप्लेन की तब हमने जाना की इस तरह की भी चीजें होती हैं। फिर हमको पता चला इन मशीनों में गड़बड़ी होती हैं। उसके बाद मशीन के ऊपर हमारा डाउट फाइनल हो गया। अजय शुक्ला ने कहा कि इससे बड़ा कोई मजाक नहीं हो सकता लोकतंत्र तो लोग से बनता है और लोग ही सबसे बड़ा स्टेकहोल्डर है स्टेकहोल्डर पार्टीज नहीं है पार्टीज तुमको रिप्रेजेंट करती हैं लोकतंत्र है जब डेमोक्रेसी की बात करेंगे तो आप यह समझ लीजिए लोकतंत्र में जनता स्टेकहोल्डर हैं। जनता का नुमाइंदा होता है चुनाव बाद सांसद चुना गया विधायक को चुना गया पार्षद चुना गया हो या कोई भी हो। यह कानूनन गलत है मुझे लगता है इस पर कार्रवाई होनी चाहिए। डॉ. सुनीलम ने कहा कि मुझे लगता है के चुनाव आयोग के लिए सबसे बड़ा प्रश्न है। ईवीएम को लेकर पूरे देश में शंका है और वह शंका बार-बार बलवती होती है। उसमें पॉलीटिकल पार्टी का उनके स्टैंड पर प्रॉब्लम आ जाती है। क्योंकि जब एक ही जगह पर एक पार्टी हार जाती है। यह किस स्टेट में जीत जाती है सरकार बना लेती है तब आप ईवीएम के सवाल को उठाते हैं। फिर कहते हैं उसी ईवीएम से वहां पर सरकार बनी तो दूसरे की सरकार बन गई तो आपको प्रॉब्लम हो गया।

परिचर्चा
रोज शाम को छह बजे देखिए 4PM News Network पर एक ज्वलंत विषय पर चर्चा

मयूर जानी ने कहा कि जो ये कहे रहे हैं वह 2004 में जब यूपीए की सरकार थी। जब यूपी की नई नई सरकार बनी थी तो उनको यह यूपीए सरकार ने कहा है तो उन्होंने कहा है कि अगर बाहर निकलोगे तो आप को देशद्रोह के जुर्म में आपको गिरफ्तार कर लिया जाएगा। अगर आप भाजपा की बात करते हैं तो सवाल वहां पर भी खड़ा हो रहा है मुझे लगता है सब मिले हुए हैं। जिसके हाथ में है वह चला रहा है जिसके हाथ में तब था जो था वो चला रहा था। पता नहीं यह 2014 में वह क्यों नहीं कर पाए इससे तो यहीं मतलब निकलता हैं आप सब मिले हो।

पलक झपकते ही काल के गाल में समा गईं छह जिंदगी, 22 जख्मी

» आगरा एक्सप्रेस-वे पर हुआ भीषण हादसा, सैफई में भर्ती कराए गए घायल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

फिरोजाबाद। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे आज सुबह एक भीषण हादसा हो गया। इस हादसे में 6 लोगों की मौत और 22 लोग घायल बताए जा रहे हैं। हादसे पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने गहरा दुख जताया है।

जानकारी के मुताबिक, बुधवार सुबह को एक बस लुधियाना से यूपी के रायबरेली जा रही थी। आगरा लखनऊ एक्सप्रेसवे के फिरोजाबाद में बस की डीसीएम से भीषण टक्कर हो गई। इस भीषण हादसे में चार पुरुष, एक महिला और बच्चे की मौत हो गई। वहीं, 22 लोग घायल हैं। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल 9 लोगों को शिकोहाबाद के अस्पताल भेजे गए हैं। बाकी अन्य को सैफई भेजा गया है। ये हादसा शिकोहाबाद के नगला खंगार के 61 माइल स्टोल के पास आगरा लखनऊ एक्सप्रेसवे पर हुआ है। चालक को झपकी आने की वजह से स्लीपर बस के आगे चल रही डीसीएम से टक्कर हो गई। मरने वालों में अभी सभी की शिनाख्त भी नहीं हो पाई है। जानकारी के मुताबिक, बुधवार तड़के एक स्लीपर बस लुधियाना से यूपी के रायबरेली जा रही थी।

छपरा में ट्रक ने कुचले तीन बाइक सवार

छपरा। बिहार के छपरा में रफ्तार के कहर ने तीन दोस्तों की जान ले ली। घटना भेल्दी थाना अंतर्गत कटसा गांव के पास बुधवार देर रात हुई। जब अनियंत्रित ट्रक और बाइक की टक्कर में बाइक सवार तीन युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में गखा थाना क्षेत्र के कुदरबग्घा गांव निवासी सतीश सिंह का 24 वर्षीय पुत्र आयुष सिंह, कदना गांव निवासी रामविचार सिंह के 22 वर्षीय पुत्र नीरज कुमार और कदना गांव निवासी गणेश सिंह का उत्तम कुमार शामिल हैं। सूचना के बाद मौके पर पहुंची थाना पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी।

मनी लांड्रिंग मामले में पेश हुए माफिया मुख्तार अंसारी

» जिला जज की अदालत ने सुनवाई के बाद फैसला रख लिया सुरक्षित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। माफिया मुख्तार अंसारी को मनी लांड्रिंग मामले में ईडी ने आज प्रयागराज के जिला जज की अदालत में पेश किया। ईडी ने अंसारी की कस्टडी रिमांड के लिए याचिका दायर की है। इस मामले में कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया है। इलाहाबाद जिला न्यायाधीश की कोर्ट में 14 दिन कस्टडी रिमांड की मांग की है।

जिला न्यायाधीश ने सुनवाई कर फिलहाल फैसला सुरक्षित रख लिया है। बता दें कि अंसारी के पुत्र विधायक अब्बास अंसारी और साले शरजील को भी पुलिस गिरफ्तार कर रिमांड पर ले चुकी है। फिलहाल दोनों की रिमांड कस्टडी पूरी होने के बाद जेल भेजा जा चुका है। अब अंसारी को गिरफ्तार कर ईडी कस्टडी लेकर पूछताछ करने की तैयारी में है। मुख्तार अंसारी फिलहाल बांदा की जेल में बंद है। बी वारंट पर मुख्तार को बांदा जेल से प्रयागराज लाया गया है।

फोटो :4 पीएम

लोकार्पण स्वर्गीय राम नरेश सिंह मार्ग के नामकरण के अवसर पर मेयर को सम्मानित करते लोग।

स्व. राम नरेश के नाम पर हुआ रोड का नामकरण

लखनऊ। शहर के अलीगंज स्थित पुरनिया चौराहे से सेक्टर एच को जाने वाली रोड अब पूर्व नगर निगम कर्मचारी नेता कॉमरेड स्वर्गीय राम नरेश सिंह के नाम से जानी जाएगी। रोड के नामकरण के दौरान महापौर संयुक्ता भाटिया और रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के पुत्र व युवा भाजपा नेता नीरज सिंह मौजूद रहे। ये जानकारी नगर निगम कर्मचारी संघ के अध्यक्ष आनंद वर्मा ने दी। कार्यक्रम में क्षेत्रीय पार्षद सहित नगर निगम कर्मचारी संघ के तमाम कर्मी तथा क्षेत्रीय लोग उपस्थित रहे।

भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हुए आरबीआई के पूर्व गवर्नर राजन

» राहुल के साथ की लंबी मंत्रणा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सवाईमाधोपुर। राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' का राजस्थान में आज 10वां दिन है। सवाईमाधोपुर के भाड़ोति से शुरू हुई आज की भारत जोड़ो यात्रा ने आज दौसा जिले में भी प्रवेश किया। राहुल की इस यात्रा में कई गैर राजनीतिक हस्तियां भी उनको सपोर्ट करने पहुंचीं और राहुल के साथ नजर आईं।

इसी क्रम में आज यात्रा में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के पूर्व गवर्नर एन रघुराम राजन भी शामिल हुए। इस दौरान यात्रा में रघुराम राजन राहुल गांधी से लंबी बातचीत करते भी नजर आए। बता दें कि रघुराम राजन को यूपीए सरकार में आरबीआई का गवर्नर बनाया गया था। रघुराम राजन आर्थिक मुद्दों पर बेबाक अपनी बात रखने के लिए जाने जाते हैं। भारत जोड़ो यात्रा में रघुराम राजन राहुल से कदम से कदम मिलाते हुए चलते दिखाई दे रहे हैं। दौसा में भारत जोड़ो यात्रा पांच दिन रहेगी।

शराब पीने से बिहार में अब तक 17 लोगों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के छपरा में शराब पीने से अब तक 17 लोगों की मौत हो चुकी है। विधानसभा में भी इस घटना पर सत्ता पक्ष-विपक्ष के बीच गहमा-गहमी रही।

परिजन जहरीली शराब से मौत का दावा कर रहे हैं, इस बार घटना सारण जिले के इसुआपुर थाना क्षेत्र के डोइला गांव में हुई है। मृतकों में 45 वर्षीय संजय सिंह, 46 वर्षीय विजेन्द्र यादव, 38 वर्षीय अमित रंजन, 38 वर्षीय कुणाल सिंह, हरेंद्र राम, 55 वर्षीय रामजी साह, 30 वर्षीय मुकेश शर्मा, मंगल राय, 42 वर्षीय नासिर हुसैन, 43 वर्षीय जयदेव सिंह, 42 वर्षीय रमेश राम, 48 वर्षीय चंद्रमा राम, अजय गिरी, भरत राम, मनोज राम, गोविंद राय, 16 वर्षीय विक्की महतो शामिल हैं।

सांसद हसन बने लोस में सपा के नेता

» मुलायम सिंह की मौत के बाद से खाली था यह पद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी ने मुरादाबाद से सांसद एसटी हसन को लोकसभा में पार्टी का नेता नियुक्त किया है। पार्टी संरक्षक मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद से लोकसभा में ये पद खाली था। अब अखिलेश यादव ने एसटी हसन को इस पद पर नियुक्त कर मुस्लिम वोट बैंक को भी साधने का प्रयास किया है।

2019 के लोकसभा चुनाव में सपा के पांच सांसद थे। उस समय मुलायम पार्टी के नेता थे। 2022 में अखिलेश यादव के करहल और आजम खान के रामपुर से विधायक चुने जाने के बाद इस्तीफे के चलते आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा सीट खाली हो गई थी। उपचुनाव में पार्टी इसे बचा नहीं पाई

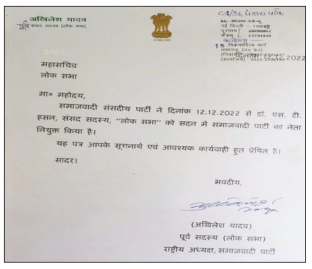

लिहाजा संख्या घटकर तीन रह गई। मुलायम की मैनपुरी सीट से डिंपल यादव के चुनाव जीतने के बाद पार्टी की लोकसभा में तीन की संख्या बरकरार है। लोकसभा में सपा के पास हालांकि नेता चुनने के लिए बहुत विकल्प मौजूद भी नहीं है। एसटी हसन के अलावा संभल से सांसद शफीकुर्रहमान बर्क और नवनिर्वाचित डिंपल यादव में से ही पार्टी को किसी को एक को चुनना था। मैनपुरी से मुलायम की विरासत लेकर लोकसभा पहुंचीं डिंपल को यह जिम्मेदारी देने पर परिवारवाद के आरोप मुखर होने का खतरा था, वहीं सामाजिक समीकरण भी प्रभावित होते। यूपी में अखिलेश यादव विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं, जबकि विधानपरिषद में लालबिहारी यादव पार्टी के नेता हैं। लालबिहारी पहले विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष थे लेकिन सीटें कम होने के चलते सपा से नेता प्रतिपक्ष का पद छिन गया।

वहीं, राज्यसभा में भी रामगोपाल यादव पार्टी के नेता हैं। इसलिए, डिंपल को नेता बनाए जाने से यूपी से लेकर दिल्ली तक सदन में पार्टी की कमान यादव चेहरों के हाथ में होती। वहीं, एसटी हसन को जिम्मेदारी देकर पार्टी ने अल्पसंख्यक वोटरों के जुड़ाव को और मजबूत करने पर नजरें गड़ाई हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक बबिता चतुर्वेदी के लिए 4पीएम आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रधान संपादक- अर्चना दयाल, संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 । Email: daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in । RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।